ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 139-141
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ0 कनुप्रिया

सहायक प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लक्सर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत

Received-23.11.2023, Revised-30.11.2023, Accepted-04.12.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः कौटिल्य, सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के राजनीतिक गुरु तथा परामर्शदाता और महान ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' के रचयिता थे। 'अर्थशास्त्र', आंतरिक प्रशासन, सैन्य रणनीति, कूटनीति और अर्थशास्त्र के पहलुओं को शामिल करते हुए एक विशाल साम्राज्य को नियंत्रित करने के लिए दिशा–निर्देशों का एक संकलन है। इसलिए कौटिल्य को एक महान राजनीतिज्ञ व कुशल आर्थिक नीतियों का जनक माना जाता है। एक समृद्ध, सुरक्षित, सुव्यवस्थित सुनियोजित एवं गतिशील राज्य के निर्माण के लिए कौटिल्य ने जिन आर्थिक नीतियों का वर्णन किया है। वह वर्तमान समय में भी उतने ही प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं। उनके द्वारा दिए गए राजस्व, सार्वजनिक व्यय, कर संग्रह, व्यापार, पशुधन तथा कृषि संबंधी महत्वपूर्ण विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कितने प्रासंगिक हैं। इन्हीं का विवेचन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– कौटिल्य, अर्थशास्त्र, आर्थिक, नीति, जनकल्याण, राजनीतिक गुरु, परामर्शदाता, आंतरिक प्रशासन, सैन्य रणनीति।

कौटिल्य एक महान दार्शनिक, अर्थशास्त्री और एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। कौटिल्य के अनुसार किसी भी राष्ट्र के जीवन का आधार 'अर्थ' है अर्थात जीवन की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिए अर्थ/धन की आवश्यकता है। राज्य के विकास, सुव्यवस्थित शासन, कृषि, कर प्रणाली, सार्वजनिक व्यय तथा कल्याण संबंधी आदि उनके आर्थिक विचार तथा नीतियां आज भी वर्तमान शासन की कार्य प्रणालियों में स्पष्ट रूप से दिखती हैं। कौटिल्य के विचारों को आज भी राज्य के आर्थिक–सामाजिक विकास एवं कल्याण के लिए निर्मित नीतियों में अपनाते हुए स्थान दिया जाता है, क्योंकि उनके विचार जहां राज्य को आर्थिक मजबूती प्रदान करते हैं वहीं वह समाज कल्याण और आत्मनिर्भरता की बात कर एक सशक्त समाज की संरचना की बात भी करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में चाणक्य के राजनीतिक व आर्थिक सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है, जो देश की कुशल व्यवस्था और सफल संचालन प्रक्रिया में सहायक हैं।

उद्देश्य – 1. कौटिल्य के आर्थिक विचारों तथा नीतियों का अध्ययन करना।
2. कौटिल्य के आर्थिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

कौटिल्य के आर्थिक विचारों में तत्कालीन भारत की परिस्थितियों का संकेत मिलता है। वह मानव जीवन को संपूर्णता में देखते थे। चूंकि राष्ट्रीय जीवन की उन्नति और जनकल्याण की भावना से प्रभावित होने के कारण उनके विचारों में मानव समाज से संबंधित सभी समस्याओं का उल्लेख मिलता है, इसलिए इन विचारों को राजनीति तथा अर्थनीति का मिश्रण कहना अधिक उपयुक्त होगा।

कौटिल्य के जीवन के संबंध में प्रामाणिक सामग्री का अभाव है, परंतु उन्हें मौर्य वंश के प्रसिद्ध सम्राट चंद्रगुप्त और सिकंदर का समकालीन माना जाता है। उनके जीवन को चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से संबंधित किया जाता है। उनकी पुस्तक श्कौटिल्य का अर्थशास्त्रश के संबंध में डॉ श्याम शास्त्री ने लिखा है, भारतीय शिलालेखों में की गई खोजों से पता चलता है कि चंद्रगुप्त को 321 ईसवी पूर्व राजा बनाया गया था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कौटिल्य ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 321 और 400 ईसवी पूर्व के बीच लिखा।" उनका वास्तविक नाम विष्णुगुप्त था परंतु राज्य क्रिया–कलापों में कुटिल नीतियों के ज्ञाता होने के कारण उन्हें कौटिल्य कहकर पुकारा जाता था। चणक ऋषि की संतान होने के कारण भी वे चाणक्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। अधिमान चिंतामणि में हेमचंद्र ने कौटिल्य के दस नामों का उल्लेख किया है।

"कौटिल्य तक्षशिला विश्वविद्यालय के अपने विषय के आचार्य थे और चंद्रगुप्त मौर्य उस विश्वविद्यालय में विद्यार्थी थे।" राष्ट्र प्रेम की भावनाओं के कारण उन्होंने मगध राज्य को नंद राजाओं के अत्याचार से छुटकारा दिलाया। चंद्रगुप्त मौर्य को राजा बना कर मौर्य वंश की स्थापना में सहयोग दिया और फिर चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया। कुछ पश्चिमी विद्वानों ने कौटिल्य तथा उनकी प्रसिद्ध पुस्तक के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने इसके काल के संबंध में भी शंका प्रकट की है। इन लेखकों में डॉ. जोली, डॉ. कीथ तथा डॉ. विंटर नीज का नाम उल्लेखनीय है, परंतु प्राचीन भारतीय ग्रंथों में स्पष्ट रूप से उनकी वास्तविकता के प्रमाण उपलब्ध हैं। कामंदक के अपने ग्रंथ नीतिसार में, दण्डी ने अपने ग्रंथ दशकुमारचरित और बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक कादंबरी में कौटिल्य और उनकी पुस्तक का उल्लेख किया है।

आधुनिक समय में सर्व श्री हरप्रसाद शास्त्री, गणपति शास्त्री, श्याम शास्त्री आदि ने कौटिल्य की वास्तविकता को सिद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. के.पी जायसवाल ने भी कोलकाता विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में तथा अपनी पुस्तक हिंदू पोलिटी में कौटिल्य की प्रामाणिकता को सिद्ध किया है। कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र पुस्तक में 15 अधिकरण, 150 अध्याय, 180 उपविभाग और 6000 श्लोक हैं। यह पुस्तक सामान्य जीवन की व्यावहारिक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए राजकीय निर्देशन हेतु लिखी गई है। सेलटोरे ने कौटिल्य की विचारधारा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि, भारत की प्राचीन राजनीतिक विचारधाराओं में कौटिल्य की विचारधारा सबसे अधिक ध्यान देने योग्य है।

मुख्य आर्थिक विचार– कौटिल्य के मुख्य आर्थिक विचारों की चर्चा निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत की जा सकती है –

1. अर्थशास्त्र क्या है– कौटिल्य ने अपनी पुस्तक के पंद्रहवें अधिकरण के पहले अध्याय में अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है। उनके अनुसार, मनुष्यों की जीविका को अर्थ कहते हैं, मनुष्यों से युक्त भूमि को भी अर्थ कहते हैं, इस प्रकार की भूमि को प्राप्त करने

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

और उसकी रक्षा करने वाले उपायों का नियंत्रण करने वाला शास्त्र अर्थशास्त्र कहलाता है, अर्थात भूमि को प्राप्त करने, अधिक उत्पादन के लिए उसकी रक्षा करने, जीविका प्रदान करने तथा समाज के व्यवहार का संचालन करने वाले शास्त्र को ही कौटिल्य ने अर्थशास्त्र माना है। स्पष्ट है कि कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के संबंध में एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है तथा इसकी व्याख्या को धन अथवा संपत्ति तक ही सीमित ना रखते हुए इसे समस्त मानव व्यवहार का आधार बनाया है। उपरोक्त परिभाषा से यह भी स्पष्ट होता है कि अर्थशास्त्र की व्याख्या में तीन तत्वों का समावेश है – मनुष्य, भूमि तथा जीविका। इसका तात्पर्य यह है कि मानव युक्त भूमि प्रयत्नों का आधार बनकर उत्पादन की प्रक्रिया को संभव बनाती है और अर्थ की प्राप्ति से जीविका का आधार उपलब्ध हो जाता है। यह भी उल्लेखनीय है कि कौटिल्य ने अर्थ की प्राप्ति के लिए मानवीय पुरुषार्थ और भूमि को सर्वोच्च स्थान दिया है।

2. कृषि का महत्व– कौटिल्य ने जिस भारतीय अर्थव्यवस्था का उल्लेख किया है वह मूल रूप से ग्रामीण और कृषि प्रधान थी। जमीदारी प्रथा के स्थान पर व्यक्तिगत .षि खेती व्यवस्था व्याप्त थी। भूमि का एक भाग राजा के नियंत्रण में था, जिस पर अधिपतियों की व्यवस्था रहती थी। राजा का यह कर्तव्य था कि वह प्रजा की भलाई के लिए कार्य करें।

कृषि (सीता) की उन्नति और निरीक्षण हेतु सीताध्यक्ष नियुक्त करने का सुझाव दिया गया है। इस पद के लिए उन्होंने एक योग्य और कृषि समस्याओं से परिचित व्यक्ति का उल्लेख किया है, जो कृषि उन्नति के दायित्व को पूरा कर सकें। भूमि संरक्षण, अच्छें बीजों का प्रयोग, सिंचाई की व्यवस्था, बीजों के संग्रह की आवश्यकता तथा विविध प्रकार की फसलों को बोने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। धान और गेहूं को सर्वोत्तम फसलें माना गया है। संकट के लिए फसलों के संग्रह पर भी बल दिया गया। सिंचाई सुविधाओं के विस्तार का दायित्व राज्य पर डाला गया। बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने तथा कृषि उन्नति के लिए राज्य द्वारा समस्त प्रकार की सहायता का उल्लेख किया गया। उन्हीं के शब्दों में, राजा को चाहिए कि वह कृषि की उन्नति के लिए यंत्र, बीज, बैल और धन देकर कृषकों की सहायता करें। (अधिकरण 2 प्रकरण 17 अध्याय 1)।

3. पशुधन – कृषि क्रियाओं को पूरा करने तथा दूध, घी, दही आदि पौष्टिक आहार प्राप्त करने के लिए पशुओं को राष्ट्रीय धन की संज्ञा दी गई है। भूमि को जोतने, बीज बोने तथा अनाज को पृथक करने में पशुओं का विशेष महत्व होता है। इस दृष्टि से उनकी रक्षा और देखभाल को आवश्यक माना गया है। उनके चारे के लिए अपेक्षा.त कम उपजाऊ भूमियों को छोड़ने का सुझाव कौटिल्य द्वारा दिया गया है। पशुओं की चारागाह के लिए राजकीय व्यवस्था का उल्लेख भी उन्होंने किया है तथा इन चारागाहों के लिए वित्ताध्यक्ष (चारागाह अध्यक्ष) की नियुक्ति का सुझाव दिया है।

4. उद्योग – कृषि को सर्वोपरि स्थान देने पर भी कौटिल्य ने उद्योग धंधों की उपेक्षा नहीं की। सूत के निर्माण और वस्त्र उद्योग के विकास द्वारा रोजगार की सुविधाओं के विस्तार की बात कही गई है। वस्त्र उद्योग के विकास हेतु सूत अध्यक्ष की नियुक्ति का सुझाव दिया गया है। उन्होंने विविध प्रकार के कपड़ों के उत्पादन पर भी बल दिया है। वस्त्र उद्योग में लगे श्रमिकों तथा महिलाओं के उचित नियमित वेतन देकर उनकी सुख सुविधाओं पर भी उन्होंने पर्याप्त बल दिया है। वस्त्र उद्योग के अतिरिक्त कौटिल्य ने चमड़ा उद्योग का भी उल्लेख किया है तथा उनके वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि उस समय यह उद्योग भी पर्याप्त विकसित था।

5. श्रम – कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में मानवीय श्रम के महत्व पर अत्यधिक बल दिया है। श्रम को प्रगति का आधार माना है, श्रम के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत आदरपूर्ण है। औद्योगिक कार्यों की प्रगति में उन्होंने श्रमिकों के सहयोग को आवश्यक माना है। अतः कुशल शिल्पियों तथा कारीगरों के लिए उन्होंने पुरस्कार तथा सम्मान की व्यवस्था का उल्लेख किया है। समझौते के अनुसार व समय पर वेतन भुगतान का उन्होंने समर्थन किया है। काम न करने वाले अथवा चोरी करने वाले कर्मचारियों के लिए उन्होंने कठोर दंड की व्यवस्था का सुझाव दिया है। आर्थिक संकट की परिस्थितियों में वह स्त्रियों को भी जीविका के लिए रोजगार ग्रहण करने की अनुमति देते हैं।

6. व्यापार – आचार्य कौटिल्य ने व्यापारिक जगत में सामान्य लाभ की प्राप्ति हेतु व्यापारियों द्वारा मूल्यवृद्धि, जमाखोरी तथा माप–तोल में धोखाधड़ी की प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है। जनहित की सुरक्षा हेतु वह इस क्षेत्र में कड़े सरकारी प्रशासन द्वारा उपरोक्त प्रवृत्तियों पर नियंत्रण के सुझाव देते हैं। उन्होंने संस्थाध्यक्ष की नियुक्ति द्वारा बाजार में मूल्य नियंत्रण, भंडारण, माप तोल की क्रियाओं पर कड़ी निगाह रख कर दोषी व्यापारियों के लिए दंड की व्यवस्था का भी विवरण दिया है। उन्होंने देश में उत्पादित वस्तुओं पर 5 प्रतिशत और विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं पर 10 प्रतिशत लाभ की अनुमति दी है। अधिक लाभ लेने वालों के लिए वह दंड तथा जुर्माने का सुझाव देते हैं। उन्होंने अन्य देशों से व्यापारिक संबंधों का समर्थन किया है।

7. राजस्व – कौटिल्य राजस्व के संबंध में लिखते हैं, सब कार्यों का प्रारंभ कोष पर ही आश्रित है। इसलिए राजा को चाहिए कि वह सबसे पहले कोष पर ध्यान दें। (दूसरा अधिकरण, आठवां अध्याय) कौटिल्य राजकीय कोष की व्यवस्था का दायित्व कोषाध्यक्ष पर दिए जाने की बात कहते हैं।

आय – कौटिल्य ने धन को एकत्रित करने के लिए समाहती (धन को एकत्रित करने वाला अधिकारी) की नियुक्ति का सुझाव दिया है। समाहती दुर्ग, राष्ट्र, खनि, सेतु, वन, व्रज एवं वणिक पथ के स्रोतों से आय को एकत्रित करें। विविध प्रकार के करों से एकत्रित आय को दुर्ग का नाम दिया है, इस मद में 22 स्रोतों का उल्लेख किया है। कृषि, अन्न, उपहार वृक्षों, नौकाओं, चरागाहों आदि से एकत्रित धन को राष्ट्र कहा गया है। खनिज पदार्थों की आय को खनि तथा फल, फूल व सब्जी के उत्पत्ति स्थान को सेतु कहा गया है। उन्होंने वनों को भी आय का स्रोत माना है तथा पशुओं से होने वाली आय को व्रज कहा है। थल मार्ग तथा जल मार्ग की आय को वणिक पथ संबोधित किया गया है। उपरोक्त साधनों से प्राप्त समस्त आय को वह अर्थ रूपी शरीर कहकर पुकारते हैं।

राजकीय आय की प्राप्ति में बाधक तत्वों में वह अज्ञान, आलस्य, प्रमाद, काम, क्रोध, दर्प, लोभ तथा परिश्रम के प्रति अनिच्छा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

का उल्लेख करते हैं। कौटिल्य ने राजकीय आय को मुख्यतः तीन भागों में बांटा है – वर्तमान, पर्युषण तथा अन्यजात (दूसरा अधिकरण, अध्याय छः)। प्रतिदिन की आमदनी को वर्तमान, पिछले वर्ष का बकाया अथवा शत्रु देश से प्राप्त पर्युषित आय हैं। भूले हुए धन का स्मृत हो जाना, अपराध करने वाले व्यक्तियों से दंड स्वरूप प्राप्त धन, अपने प्रभुत्व से प्राप्त किया गया धन, शत्रु की सेना से प्राप्त धन तथा वह धन जिसका कोई अधिकारी ना हो अन्यजात आय की श्रेणी में सम्मिलित होता है। संकटकालीन परिस्थितियों में अतिरिक्त आय के स्रोतों का भी आचार्य कौटिल्य ने उल्लेख किया है।

व्यय – राज्य के संगठन, प्रशासन, सुरक्षा तथा जन कल्याण हेतु कौटिल्य ने व्यय की दिशाओं पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने देव पूजा, दान, अंतरूपुर, भोजनालय, दूतों कोष्ठागार, शस्त्रागार, पण्यग्रह, कुप्यग्रह का व्यय, कृषि तथा व्यापार सेना पर व्यय, उपयोगी पशुओं का भरण पोषण तथा वनों की सुरक्षा पर व्यय का उल्लेख किया है। शासक की कठिनाइयों को कम करने के लिए वह आय तथा व्यय के संतुलन का समर्थन करते हैं। जिससे शासक को आर्थिक संकट का सामना ना करना पड़े। सलेटोर के अनुसार, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भारतीय वित्त के इतिहास में एक नया अध्याय खुला है। इसमें हमें सार्वजनिक वित्त के सबसे अधिक विस्तृत और संभवत विश्व के प्राचीनतम सिद्धांत मिलते हैं।

8. जन कल्याण – कौटिल्य के अर्थशास्त्र की मूल भावना जनकल्याण के सिद्धांत पर आधारित है। अतः उन्होंने राजा को जनता की समृद्धि का माध्यम माना है तथा राजा और प्रजा में पिता और संतान के संबंधों की कल्पना की है, इस दिशा में वे –

- कर्मचारियों के उचित वेतन की मांग करते हैं।
- संकटकालीन परिस्थितियों में राजकीय सहायता व अनुदान के साथ–साथ ऋण देने की योजनाओं का समर्थन करते हैं।
- बालक, वृद्ध, रोगी व अनाथ लोगों के पालन का दायित्व राजा पर डालते हैं।
- कार्यरत कर्मचारी की मृत्यु हो जाने पर आश्रितों के लिए राजकीय सहायता का सुझाव देते हैं।
- भ्रष्टाचारी व्यापारियों के कठोर दंड की मांग करते हैं।
- मूल्यों पर कड़ा नियंत्रण रखने का सुझाव देते हैं।
- धनवान व्यक्तियों द्वारा दिए गए ऋणों पर अधिकतम ब्याज की सीमाओं को निश्चित करने की मांग करते हैं।
- अनाज व अन्य सामान्य उपभोग की वस्तुओं को संग्रह करने वाले व्यापारियों के लिए दंड का सुझाव देते हैं।
- शोषण की प्रवृत्तियों पर नियंत्रण हेतु वह लाभ की दरों का निर्धारण करने की बात करते हैं।
- राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वह राज्य द्वारा महत्वपूर्ण उद्योगों की स्थापना का सुझाव देते हैं।

कौटिल्य का मूल्यांकन प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों में कौटिल्य तथा उनके विचारों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। राज्य संचालन की व्यवस्था, राजा का उत्तरदायित्व तथा जन कल्याण के लिए जिन सिद्धांतों का उन्होंने वर्णन किया है, उनकी अद्भुत तथा असाधारण प्रतिभा का प्रतीक है। उनके विचारों में कल्याणकारी राज्य की स्थापना का चित्र स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। राजा की कुशलता कर्मचारियों की कर्तव्यनिष्ठा तथा बाजारी आर्थिक शक्तियों पर नियंत्रण द्वारा जनकल्याण की वृद्धि पर अत्यधिक बल देते हैं। कुशलता व निपुणता को वह पुरस्कृत करना चाहते हैं तथा चोरी व धोखा उनके लिए दंडनीय अपराध है, भ्रष्टाचार को वह सुशासन का शत्रु मानते हैं। मानव जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं, जिसकी उन्होंने उपेक्षा की हो। वह राजा के कर्तव्य तथा राज्य के प्रति जनता के उत्तरदायित्व को समान महत्व देते हैं। उनके विचार व्यावहारिक हैं तथा तत्कालीन परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में प्रतिपादित किए गए।

निष्कर्ष– उपर्युक्त अध्ययन से कुशल आर्थिक नीतियों के जनक कौटिल्य के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता आज के युग में भी है यह पूर्ण रूप से स्पष्ट हो रहा है। किस प्रकार राजा अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए जनता का अधिकतम कल्याण संभव हो। वर्तमान परिदृश्य में कौटिल्य के विचार आज के युग में भी पथ प्रदर्शक प्रतीत होते हैं। इसका उदाहरण है कौटिल्य के आर्थिक कल्याण नीतियों का अनुसरण वर्तमान सरकारों द्वारा भी आर्थिक नीतियों के निर्माण में किया जा रहा है, जो राज्य के सामाजिक–आर्थिक कल्याण का आधार बनी हुई है, क्योंकि एक देश के वित्तीय एवं सैनिक मजबूती अभी भी राष्ट्रों में निर्णायक भूमिका निभाती है। कौटिल्य के आर्थिक विचार समाजवाद राज्यों के प्रशासनिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ramaswamy, T.N., Essential of Indian Statecraft, p.- 1, 1963.
2. Ghildiyal, A.N., प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारक, 1973.
3. अनुराधा लवानिया आचार्य चाणक्य के दार्शनिक विचार एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता, International Journal of Advanced Educational Research, 2018.
4. Shamashastry, R., Kautilya's Arthshastra, 2019.
5. Jindal, Nirmal, Relevance of Kautilya in Contemporary International System, International Journal of Historical In sight and Research, 2019.
6. रेनू जैन, कौटिल्य के आर्थिक विचार वर्तमान संदर्भ में, JETIR,Vol.07, Issue 2, 2020.

*****